



मनुष्य/इंसान

बेईमान सजे-बजे हैं
तो क्या हम मान लें कि
बेईमानी भी एक सजावट है?
कातलि मजे में हैं
तो क्या हम मान लें कि कितल करना एक मजेदार काम है?
मसला मनुष्य का है
इसलिये हम तो हरगजि नहीं मानेंगे
कि मसले जाने के लिये ही
बना है मनुष्य ।

-वीरेन डंगवाल

उन्हें सलाम
जनिहोंने दम तोड़ते हुए
आदमी की आँखों में झाँका और उनमें
उम्मीदों के
सतारे जगमगाने लग गए ।

-महेंद्र नेह

आओ,
हम बीहड़ और कठनि सुदूर यात्रा पर चलें
आओ, क्योंकि-
छछिला, नरिददेश्य और लक्ष्यहीन जीवन
हमें स्वीकार नहीं
हम आकांक्षा, आक्रोश, आवेग और
अभिमिन से जएिगे
असली इंसान की तरह जएिगे ।

-कार्ल मार्क्स

इन्द्र आप यहाँ से जाएँ



तो पानी बरसे
अदति, आप यहाँ से चले
तो कुछ ढंग की संततियों जन्म लें
देवियों-देवताओं, हम मनुष्य आप से
जो कुछ कह रहे हैं
प्रार्थना के शिल्प में नहीं ।

-देवी प्रसाद मशिर

ताकत से आदमी उठता कम गरिमा ज़्यादा है
जब वह इस ताकत की व्यर्थता समझ जाता है
तो ज़्यादा बेहतर आदमी होता है
और ज़्यादा बेहतर आदमी होता है तो देवता कहलाता है ।

-प्रयिदर्शन

ईश्वर का पहला चिन्तन था-फरशिता ।
ईश्वर का पहला शब्द था-मनुष्य ।

-खलील जबिरान

बस कदिश्वार है हर काम का आसों होना
आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसों होना ।

-मरिजा गालबि

हर आदमी में होते हैं दस बीस आदमी
जसि को भी देखना हो कई बार देखना ।

-नदि फाजली

वक्त रहता नहीं कहीं टकिकर
इसकी आदत भी आदमी सी है ।

-गुलजार



PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/human-essay>

